मराठी भक्ति साहित्य : संत ज्ञानेश्वर

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, छठा सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: भारतीय भक्ति साहित्य (HIND3025)

विषय-सूची

- मराठी भक्ति साहित्य का सामान्य परिचय
- संत ज्ञानेश्वर : जीवन परिचय एवं रचनाएँ
- भक्ति का स्वरूप
- दार्शनिक चिंतन
- सामाजिक पक्ष
- शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ मराठी भक्ति साहित्य का सामान्य परिचय

- मराठी, महाराष्ट्र प्रदेश की भाषा है तथा उत्तर और दक्षिण भारत का संधि स्थल है | अत: यहाँ दोनों क्षेत्रों की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक भावधाराओं का स्वाभाविक प्रभाव पड़ता रहा है |
- महाराष्ट्र में प्रथम शताब्दी ईसवी के आसपास से ही वासुदेव पूजा का उल्लेख मिलने लगता है | इसके साथ ही बौद्ध और जैन धर्मों का भी प्रभाव रहा है |
- 11 वीं शताब्दी आते-आते अनेक संत कवियों का आविर्भाव हुआ | अनेक विचारधाराओं / मतों के आधार पर अनेक भक्ति – संप्रदाय अस्तित्व में आए, जिनमें तीन को प्रमुख माना गया- नाथ संप्रदाय, महानुभाव संप्रदाय और वारकरी संप्रदाय |
- ध्यातव्य है कि इनके पहले के धार्मिक संप्रदायों में – कर्मकांड, वर्ण-व्यवस्था, जाति-व्यवस्था, अंधविश्वास, रुढियों आदि का वर्चस्व हो गया था जिससे जन सामान्य को निकालने का महत्त्वपूर्ण कार्य भक्त कवियों ने किया |

- यह भी ध्यातव्य है कि भक्ति " धर्म की रसात्मक अनुभूति है |" (आचार्य रामचंद्र शुक्ल) और यह श्रद्धा और प्रेम के योग से निष्पन्न होती है |
- मराठी संतों ने हरिहर ऐक्य की कल्पना की, जिसमें उन्होंने वैष्णव और शैव भक्ति धाराओं का समन्वय किया, जो पंढरपुर के विट्ठल के रूप में दिखाई देता है |
- इतना ही नहीं जब मराठी वैष्णव संप्रदाय सशक्त हुआ तब उसने बौद्धों और जैनों के – अहिंसा, सत्य, परोपकार, समानता, आदि की भावना को अपने सदाचार के नियमों में समाहित कर लिया |
- मराठी साहित्य में भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित करने में – नाथ, महानुभाव और वारकरी संप्रदायों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई |

नाथ संप्रदाय

- गोरखनाथ इस संप्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं | नाथ पंथ ने बौद्ध और जैन धर्म के मूल सिद्धांतों – अहिंसा, सदाचार और जातिगत समानता आदि को अपनाया |
- इस संप्रदाय ने वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था का विरोध करके, सामाजिक समानता स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया |
- गोरखनाथ के अनुयायियों ने कृष्ण की सगुण भक्ति को अपनाया और आत्मसात किया |
- इस संप्रदाय के प्रमुख कवि हैं – मुकुंद राज, ज्ञानेश्वर, निवृतिनाथ, मुक्ताबाई, बिसोबा खेचर आदि |

▪ महानुभाव संप्रदाय

- इसके प्रवर्तक हरपाल देव माने जाते हैं | ये गुजरात के रहने वाले थे और बाद में विदर्भ (महाराष्ट्र) आ गये | वहीं गोविन्द प्रभु से दीक्षा लेकर 'चक्रधर' कहलाए |
- यह संप्रदाय भी कृष्णोपासक भक्ति धारा के रूप में उभरा |
- यह एकेश्वरवादी संप्रदाय है |
- इस संप्रदाय ने भक्ति के क्षेत्र में सभी विषमताओं का विरोध किया, यथा – जाति-पांति, छुआछूत, अवर्ण-सवर्ण, स्त्री-पुरुष आदि |

▪ वारकरी संप्रदाय

- वारकरी का सामान्य अर्थ होता है- यात्रा करने वाला |
- भक्ति की दृष्टि से यह संप्रदाय सबसे सशक्त और समृद्ध है | इसको व्यवस्थित, सुसंगठित और प्रतिष्ठित करने का श्रेय संत ज्ञानेश्वर को दिया जाता है |

- यह संप्रदाय अद्वैत दर्शन को आधार बना कर चलता है |
- इसमें सगुण- निर्गुण भक्ति का कोई भेद नहीं है |
- इस संप्रदाय में भक्ति के क्षेत्र में – ऊँच-नीच, जाति-पांति, आदि सामाजिक विषमताओं के स्थान पर आचरण की शुद्धता पर बल दिया है |
- इस संप्रदाय के अंतर्गत आने वाले प्रमुख कवि हैं – ज्ञानेश्वर, नामदेव, गोरा कुम्हार, चोखामेला, जनाबाई आदि |

❖ संत ज्ञानेश्वर* : जीवन परिचय एवं रचनाएँ

- संत ज्ञानेश्वर का जन्म महाराष्ट्र प्रांत के पैठण शहर के पास 'आपे' गाँव में सन् १२७५ ई. में हुआ था |
- उनके पिता का नाम विट्ठल पंत और माता का नाम रुक्मिणीबाई था |
- ज्ञानेश्वर चार भाई-बहन थे- निवृतिनाथ, ज्ञानेश्वर, सोपानदेव और मुक्ताबाई | उन्होंने अपने बड़े भाई निवृत्तिनाथ को ही अपना गुरु बनाया |
- ज्ञानेश्वर के परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था इसलिए उनके परिवार को अपमानित होना पड़ा |

- ज्ञानेश्वर ने 15 वर्ष की आयु में ही भगवत् गीता पर मराठी भाषा में विख्यात 'ज्ञानेश्वरी' टीका लिखी | यह मराठी भाषा में गीता पर पहली टीका है |
- उनकी अन्य रचनाओं में – चांगदेव पासष्टी और अमृतानुभव प्रमुख हैं |
- उन्होंने मात्र 21 वर्ष की आयु में ही सन् 1296 ई. में सजीव समाधि ले ली थी |

❖ भक्ति का स्वरूप

- संत ज्ञानेश्वर निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे |
- वे भक्ति को योग, कर्म और ज्ञान से भी श्रेष्ठ मानते थे | उनकी दृष्टि में भक्ति के लिए नाम-स्मरण और कीर्तन जैसे सरल मार्गों से ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है | इसलिए उसके अनुसरण पर बल देते थे |

नाम कीर्तन

- ज्ञानेश्वर के लिए नाम-स्मरण मनुष्य की सभी प्रकार की मुक्ति का मार्ग है |
- उनकी दृष्टि में गुरु कृपा से ही आत्म सिद्धि की प्राप्ति होती है | अतः गुरु की अनिवार्यता पर बल दिया |

प्रेम तत्त्व

- ज्ञानेश्वर के लिए भक्ति ईश्वर और भक्त के परस्पर प्रेम की अभिव्यक्ति है | उनके प्रेम तत्त्व की अवधारणा पर 'नारद भक्ति सूत्र' का प्रभाव है |
- उन्होंने सूर्य की किरणों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भक्ति की अनन्यता का वर्णन किया है | उनका मानना है कि भक्त का जीवन ईश्वर के स्मरण पर अवलंबित है | वे कहते हैं – *" जिस प्रकार सूर्य के उदय के साथ ही उसकी किरणों का उदय होता है और सूर्य के अस्त होने के साथ ही उसकी किरणे भी अस्त हो जाती है |"*
- वे अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए रहस्यवाद का भी सहारा लेते हैं |

▪ भक्ति की उदारता

- भक्ति के क्षेत्र में ज्ञानेश्वर , रामानुजाचार्य और रामानंद के समान ही समाज के सभी वर्गों और वर्णों का स्वागत करते हैं |
- उन्होंने कुल, जाति, वर्ण की श्रेष्ठता को निष्फल मानते हुए भक्ति को महत्त्व दिया |

❖ दार्शनिक चिंतन

- ज्ञानेश्वर का ब्रह्म निर्गुण-निराकार और सर्वव्यापी है | वह नित्य , अखंड, और एक ही रहता है |
- वे कहते हैं कि ब्रह्म सूक्ष्म जीव से लेकर ब्रह्मा तक में वहीं ईश्वर व्याप्त है-

  " आदि ब्रह्म करुणी / शेवरी मशूक धरनि /

  आपि समस्त हे जाणनि / स्वरूप माझे //"

- वे शास्त्र ज्ञान को चुनौती देते हुए शब्द की अपेक्षा अनुभूति को महत्त्वपूर्ण मानते हैं |

❖ सामाजिक पक्ष

- ज्ञानेश्वर ने अपने समय में धर्म के नाम पर फैले वाह्याचारों का विरोध किया तथा सत्य की खोज तर्कपूर्ण ढंग से करने की वकालत की | वे मधुर वाणी के माध्यम से नैतिक मूल्यों की स्थापना पर आजीवन बल देते रहे |
- उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था और जाति व्यवस्था का विरोध किया और अपने पंथ में स्त्रियों, शूद्रों, अस्पृश्यों आदि सभी को समाहित किया |
- वे भक्ति के क्षेत्र में- ‘ जाति पाति पूछै नहीं कोई, हरि का भजै सो हरि का होई’ उक्ति को चरितार्थ करते हैं |

❖ शिल्प पक्ष

- सर्वप्रथम ज्ञानेश्वर ने संस्कृत भाषा की परिधि में बंधे ज्ञान की सीमा को तोड़कर, ज्ञान को उस समय की जन भाषा मराठी में जन सामान्य तक पहुँचाया |
- वे मानते हैं कि मराठी देशभाषा होने पर भी अमृततुल्य है | उसमें नाद सौंदर्य और लालित्य तत्व अप्रतिम है |
- ज्ञानेश्वर ने काव्य रूप की दृष्टि से ओवी और अभंग छंदों का प्रयोग किया |

❖ निष्कर्ष

- मराठी भक्ति साहित्य का बीज पहली शताब्दी ईसवी के आस-पास वासुदेव पूजा के रूप में पड़ जाता है |
- ग्यारहवीं शताब्दी ईसवी आते-आते अनेक भक्ति- संप्रदायों के आविर्भाव के साथ ही भक्ति का धारा प्रवाहित होने लगती है | परंतु उसका पूर्ण स्वरूप संत ज्ञानेश्वर के आविर्भाव के साथ ही दिखाई पड़ता है |
- संत ज्ञानेश्वर ने कर्मकांड, वर्ण-व्यवस्था, जाति-व्यवस्था, अंधविश्वास, रुढियों आदि का विरोध करते हुए, प्रेम तत्त्व आधारित भक्ति की धारा प्रवाहित की | गुरु को महत्त्व देते हुए नाम कीर्तन पर बल दिया |
- ज्ञानेश्वर निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे | उन्होंने सर्वप्रथम संस्कृत भाषा की परिधि में बंधे ज्ञान की सीमा को तोड़कर, ज्ञान को उस समय की जन भाषा मराठी में जन सामान्य तक पहुँचाया |

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- मराठी का भक्ति साहित्य : प्रो. भो. गो. देशपांडे, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी
- हिंदी को मराठी संतों की देन : विनय मोहन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् , पटना
- www. egyankosh.ac.in
- https://youtu.be/Le5wTROS4oY (* इस लिंक से ज्ञानेश्वर पर बनी फ़िल्म देख सकते हैं |

धन्यवाद